आर.एन.आई.नं.- UPHIN/2009/44666

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

सत्ता एक्सप्रेस

डी.ए.वी.पी नई दिल्ली एवं राज्य सरकार द्वारा विज्ञापन मान्यता प्राप्त

वर्ष: 12 अंक : 97 कानपुर देहात, रविवार 17 जनवरी, 2021 Email: sattaexpress@rediffmail.com

सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु एडवाइजरी जारी

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद .षि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कल्याणपुर स्थित साकभाजी अनुसंधान केंद्र पर कार्यरत वरिष्ठ फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉक्टर एमआर डबास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है। डॉ डबास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। इस कीट के शिशु का पौध ाों के कोमल तनो, पत्तियों, फूलों एवं नई फलियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर डबास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 0.03ः घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में 2ः नीम के तेल को तरल साबुन के साथ(20 मिलीलीटर नीम का तेल. 1 मिलीलीटर तरल साबुन) में मिलाकर छिड़काव करें। डॉक्टर डबास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे–छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं। जो बाद में तेजी से बढ़ कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं।उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरुप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं। यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाईथेंन एम–45 का 0.2ः घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें। डॉ एम आर डबास ने किसानों से अपील की है कि वे अपनी सरसों की फसल की निगरानी अवश्य करते रहें। फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंधन करें। जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।

सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव के लिए किसानों को एडवाइजरी

जन एक्सप्रेस संवाददाता

17/01/2021

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के साकभाजी अनुसंधान केंद्र पर कार्यरत वरिष्ठ फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉ.एम.आर. डबास ने शनिवार को किसानों को सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव के लिए एडवाइजरी जारी करते हुए बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है।

उन्होंने बताया कि इस समय माहू कीट या चेपा सरसों की फसल में आक्रमण करता है तथा इस कीट के शिशु पौधों के कोमल तनो, पत्तियों, फूलों एवं नई फलियों से रस चूस कर उसे कमजोर कर देते हैं। इस कीट के नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 0.03 फीसदी घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण के लिए फसल में 2 फीसदी नीम के तेल को तरल साबुन के साथ(20 मिलीलीटर नीम का तेल + 1 मिलीलीटर तरल साबुन) में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।

उन्होंने बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। जिसमें पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं। जो बाद में तेजी से बढ़ कर काले और बड़े हो जाते हैं और पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं। इससे बचाव के लिए डाईथेंन एम-45 का 0.2 फीसदी घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें। डॉ. डबास ने किसानों से फसल की निगरानी के साथ ही रोग या कीट आने पर प्रबंधन करने की अपील की जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।

सीएसए के वरिष्ठ फसल सुरक्षा वैज्ञानिक ने सरसों की फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए जारी की एडवाइजरी

कानपुर-(दीपक गौड़) चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कल्याणपुर स्थित साकभाजी अनुसंधान केंद्र पर कार्यरत वरिष्ठ फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉ0 एम0आर0 डबास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉ0 डबास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है इस कीट

के शिशु का पौधों के कोमल तनो, पत्तियों, फूलों एवं नई फलियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं डॉ0 डबास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है इस कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 0.03इ घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में 2इ नीम के तेल को तरल साबुन के साथ(20 मिलीलीटर नीम का तेल+ 1 मिलीलीटर तरल साबुन) में मिलाकर छिड़काव करें डॉक्टर डबास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं जो बाद में तेजी से बढ़ कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं फलस्वरुप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाईथेंन एम-45 का 0.2इ घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें डॉ0 एम0आर0 डबास ने किसानों से अपील की है कि वे अपनी सरसों की फसल की निगरानी अवश्य करते रहें फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंधन करें जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके

एमडी केशव या निरीक्षण

मडी केशव प्रसाद

वर्ष : 21 अंक : 15 www.sandhyahalchalnews.com

P- 12 ▶ नटराजन, ठाकुर और सु

आवाज आवाम की

सांध्य हलचल

प्रातः संस्करण, हिन्दी दैनिक

लखनऊ, रविवार, 17 जनवरी 2021, पृष्ठ : 12 मूल्य : 2.00 रुपया P- 12 ▶ आकाशी

सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी

सांध्य हलचल ब्यूरो

कानपुर। सीएसए के कल्याणपुर स्थित साकभाजी अनुसंधान केंद्र पर कार्यरत वरिष्ठ फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉ. एम.आर. डबास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है। डॉ. डबास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनो, पत्तियों, फूलों एवं नई फलियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉ. डबास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 0.03त्न घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में 2त्न नीम के तेल को तरल साबुन के साथ(20 मिलीलीटर नीम का तेल + 1 मिलीलीटर तरल साबुन) में मिलाकर

माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता हैः डॉ. डबास

छिड़काव करें। डॉक्टर डबास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं। जो बाद में तेजी से बढ़ कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं।उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरुप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं। यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाईथेंन एम-45 का 0.2त्न घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें। डॉ एम आर डबास ने किसानों से अपील की है कि वे अपनी सरसों की फसल की निगरानी अवश्य करते रहें। फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंधन करें। जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सकें।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी–अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

3 कुंभ के अवशेष कार्य जल्द हों पूरेः सीएम

वर्षः12 | अंकः30 | देहरादून, शनिवार, 16 जनवरी, 2021 | पृष्ठः08 | मूल्यः2/रु. प्र

कुलपति के नेतृत्व में जरूरतमंद परिवारों को वितरित किये कंबल

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुरः चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी० आर० सिंह के कुशल निर्देशन में जैव संवर्धित गांव अनूपपुर में शीत लहर के प्रकोप के दृष्टिगत जरूरतमंद परिवारों को कंबल वितरण कार्यक्रम किया गया इस अवसर पर मुख्य अतिथि अकबरपुर रनिया क्षेत्र की विधायक प्रतिभा शुक्ला एवं पूर्व सांसद अनिल शुक्ला वारसी उपस्थित रहे मुख्य अतिथि ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा यह एक सराहनीय पहल है।

प्रतिभा शुक्ला ने कहा कि जैव संवर्धित गांव में 1 सप्ताह में सड़कों का निर्माण शुरू करा दिया जाएगा साथ ही गांव में स्थित स्कूल की बाउंड्री वॉल भी बनवाई जाएगी उन्होंने कहा कि गांव के तालाब का जीर्णोद्धार भी कराया जायेगा उन्होंने उपस्थित किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि विकास कार्यों की सूची से आप लोग शीघ्र उपलब्ध करा दें जिससे गांव मे अन्य विकास कार्य समय पर कराए जा सके विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ सीपी गंगवार, डॉ० यू०डी० अवस्थी एवं डॉ० अनिल कुमार तथा अन्य वैज्ञानिकों ने मुख्य अतिथि द्वारा गांव के जरूरत मंद लोगों को 80 कंबल वितरण किए साथ ही कहा कि गांव मे कृषकों के आत्मनिर्भर हेतु तकनीकी जानकारियां वैज्ञानिकों द्वारा दी जाती रहेंगी कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ० अशोक कुमार ने गांव की महिलाओं एवं लोगों से अपील की है कि वे कुपोषण को दूर करने के लिए पोषण वाटिका का सुचारु रूप से प्रबंधन रखें समय–समय पर कृषि वैज्ञानिकों की तकनीकी सलाह अवश्य लेते रहें इस अवसर पर डॉ० निमिषा अवस्थी, डॉक्टर चंद्रकला, डॉ० राजेश राय, डॉ० अरुण कुमार सिंह एवं डॉ० अरविंद ने अपने अपने व्याख्यान दिए। इस अवसर कई ग्रामीण उपस्थित रहे।

सरसों की फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी

शाश्वत टाइम्स

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कल्याणपुर स्थित साकभाजी अनुसंधान केंद्र पर कार्यरत वरिष्ठ फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉक्टर एमआर डबास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है। डॉ डबास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनो, पत्तियों, फूलों एवं नई फलियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर डबास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 0.03ब्र घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में 2ब्र नीम के तेल को तरल साबुन के साथ(20 मिलीलीटर नीम का तेल + 1 मिलीलीटर तरल साबुन) में मिलाकर छिड़काव करें। डॉक्टर डबास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं। जो बाद में तेजी से बढ़ कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं।उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरुप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं। यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाईथेंन एम-45 का 0.2ब्र घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें। डॉ एम आर डबास ने किसानों से अपील की है कि वे अपनी सरसों की फसल की निगरानी अवश्य करते रहें। फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंधन करें। जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।

हिन्दी दैनिक

R.N.I.No-UPHIN/2012/42725

हिन्दुस्तान का इतिहास

कानपुर से प्रकाशित

● वर्ष : 9 ● अंक 256 ● कानपुर रविवार 17 जनवरी , 2021 - पृष्ठः 8 - मूल्यः 1.00 रू.

सीएसए के वरिष्ठ फसल सुरक्षा वैज्ञानिक ने सरसों की फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए जारी की एडवाइजरी

कानपुर- चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कल्याणपुर स्थित साकभाजी अनुसंधान केंद्र पर कार्यरत वरिष्ठ फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉ0 एम0आर0 डबास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉ0 डबास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनो, पत्तियों, फूलों एवं नई फलियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं डॉ0 डबास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है इस कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 0.03त्न घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में 2त्न नीम के तेल को तरल साबुन के साथ(20 मिलीलीटर नीम का तेल +1 मिलीलीटर तरल साबुन) में मिलाकर छिड़काव करें डॉक्टर डबास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं जो बाद में तेजी से बढ़ कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं फलस्वरुप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाईथेंन एम-45 का 0.2त्न घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें डॉ0 एम0आर0 डबास ने किसानों से अपील की है कि वे अपनी सरसों की फसल की निगरानी अवश्य करते रहें फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंधन करें जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके

दवा व्यापार